ISSN 2231-1629 Knowledge Resonance
*A Half Yearly National Peer-Reviewed & Indexing with SJIF Impact Factor Research Journal*
**IMPACT FACTOR 8.072**

# भारत की विदेश नीती का ऐतिहासिक आधार

**डॉ. ए. एम. देशमुख**
*एस. पी. डी. एम. कॉलेज, शिरपूर जि.धुलिया*

**प्रस्तावनाः–**

अतीत से भारत सहिष्णु और शान्तिप्रिय देश कहा जाता है। ऐतिहासिकता से देखा जाए तो साम्राज्यवाद अवलंब न करते हुए सभी देशो के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार किया है। भारत की विदेश नीती का निर्धारण अंतराराष्ट्रीय राजनीति और राष्ट्रीय हितो के परिप्रेक्ष्य मे किया गया है। विदेश नीती के निर्माण मे प्राचीन भारतीय परंपरा और स्वाधीनता संग्राम के उच्च आदर्शो ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।[1] इतिहास साक्षी है भारत ने कभी किसी देशपर आक्रमण किया है। राजनितीक प्रभाव निर्माण करने के साथ प्रादेशिक अखंण्डता का अपहरण करनेका प्रयास किया है। युद्ध जीतने के बाद भी भारत ने नाही कोई भार्तो को रखा है। उदा.1965 का भारत–पाक युद्ध.

भारत विदेश नीती के निर्धारक तत्वो मे भौगोलिक तत्व, आर्थिक एवं सैनिक तत्व, ऐतिहासिक परंपराए, वैचारीक तत्व, वैयक्तिक तत्व, राष्ट्रीय हित[2] इन तत्वो का समावेश होता है। 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र होने के बाद भी भारत की विदेश नीति का सूत्रपात 2 सितंबर 1946 को माना जा सकता है। जब अंतरीम सरकार का निर्माण हुआ या। यही से भारत वास्तव मे अपनी विदेश नीति का अनुसरण करने मे स्वतंत्र था।

विदेश नीति की व्याख्या करते हुए प्रो. चार्लस बर्टन मार्शल कहते है ''विदेश नीती का अर्थ है। अपने राष्ट्र की कार्यकक्षा को छोडकर दुसरे परिस्थिती को प्रभावित करनेवाले कृतीयोका क्रम''[3] जॉर्ज मॉडेल्स्की का कहता है की, ''विदेश नीति का अर्थ है की, राष्ट्रव्दारा ऐसी पद्धती को विकसित करना जो अपने व्यवहारसे आंतरराष्ट्रीय परिस्थितीसे समायोजन कर सके।''[4]

विदेश नीति के बारे मे सोचते हुए। राजनितीज्ञोव्दारा राष्ट्रीय हित को केंद्रीय स्थान दिया गया है। इनमे जोसेफ फ्रॅकेल– राष्ट्रीय हित की मुलभूत धारणा[5]

फालिक्स ग्रास– वास्तव मे राष्ट्रीय विदेश नीतियोका अध्ययन[6]

भारत की विदेश नीती का अध्ययन करते हुए इनमे जो तीन प्रवृत्तीया उभरकर सामने आयी थी वह इस प्रकार है।

1. गांधीजी और नेहरु के नेतृत्व मे कॉग्रेज का एक हिस्सा जो ब्रिटीश साम्राज्य विरोधी था।
2. नेताजी सुभाशचंद्र बोस तथा कॉग्रेस का जो अन्य गुट था। इन्होने यह स्विकार किया था। भारत की जमीनसे ब्रिटीशोको खदेडने के लिए परवर्ती विरोधी ताकतो की सहायता लेनी चाहीए।[7]

स्वतंत्रता प्राप्ती से आज तक सभी प्रधानमंत्री के कार्यकाल मे जो विदेश नीती का अवलंब किया गया है। उनकी विशेषताए निम्न प्रकारकी है। उनमे–[8]

1. आर्थिक दृष्टी से संरक्षित राज्य का निर्माण
2. परराष्ट्र एवं गृहनिती की अनुपूरकता[9]
3. विदेश नीती पर लगभग राष्ट्रीय सहमती रही है। केंद्र मे विरोधी ढलो की सरकारो ने नेहरु व्दारा प्रतिपादित विदेशनीती का अनुसरण किया है।
4. आर्थिक दृष्टी से संरक्षित राज्य का निर्माण.[10]
5. आदर्शवाद तथा यथार्थवाद का संमीश्रण.
6. राष्ट्रीय हितो के साथ विश्व भाांती का समन्वय.
7. अच्छे पडोसी नीति का पालन
8. विकासशील और अविकसीत राष्ट्रो की एकजूटता का प्रयास भारत का सार्क तथा अन्य संगठनाओमे भूमिका.
9. मानवाधिकारो के पक्ष का प्रबल समर्थन उदा. आतंकवाद और तालिबान प्रती भारत की भूमिका.
10. संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रती सम्मान तथा निश्ठा के साथ उसकी निती का सम्मान.
11. सैनिकी गटबंधन तथा सैनिक संधिके विरोध के साथ किसी राष्ट्र के सम्मान को ढेस ना पहुंचे इसके लिए भारत ने हमेशा प्रयास किया है।
12. निशस्त्रीकरण नीती का अवलंबन तथा आण्विक अप्रसार संधी के प्रावधानो का अस्वीकार

गॅब्रिएल ए आमण्ड ने विदेश नीती के अध्ययन मे ऐतिहासिक पृष्ठभूमी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। इसमे[11]

अ) ऐतिहासिक पृश्ठभूमी

ब) विदेश नीती निर्माण प्रक्रिया और विशेषताए

क) विदेश नीती का सार इन तत्त्वो का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। अर्नाल्ड वोलफर्स व्दारा किसी भी राष्ट्र की विदेश भीति मे प्रत्यक्ष राष्ट्रीय उदिष्टोका, आदर्शात्मक ध्येय, परंपरागत ध्येय तथा अप्रत्यक्ष राष्ट्रीय उदि्ष्टोका, आदर्शात्मक ध्येय, परंपरागत ध्येय तथा अप्रत्यक्ष राष्ट्रीय उदिष्टोका समावेश होता है।[12] आधुनिक विश्व मे सबसे बडी समस्या अंतराष्ट्रीय संघर्ष है।[13] और यही संघर्ष खत्म हो इसलिए भारत ने हमेशासे 'वसुधैव कुटूंबकम जैसी धारणा का स्विकार किया है। ऐतिहासिकता की दृष्टीकोनसे देखे तो हमे यह प्रतित होता है।

युरोपियन प्रभुत्व कालसे बडे–बडे साम्राज्यो की रचना हुई। संपूर्ण विश्व राजनिती का आधार बना और राष्ट्रीयता, आर्थिक साम्राज्यवाद, शक्ति संतुलन[14] मे विदेश नीती तथा अंतरराष्ट्रीय नीतिने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। और भारत के विदेश नीती मे ऐतिहासिक पृष्ठभूमी मे देश का भीतरी और बाहरी इतिहास, देशका आर्थिक विकास, राजनितीक और सैद्धांतिक प्रवृत्तीया, देश के आंतरराष्ट्रीय स्थिती मे होनेवाले परिवर्तन विदेश नीति की मुख्य ऐतिहासिक प्रवृत्तीया[15] इन्होने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

**निष्कर्षः**

महत्वपूर्ण प्रश्न तथा आंतरराष्ट्रीय स्तर संगठन मे भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। भारत के बढते सम्मान को विश्व ने स्वीकार किया है। आदर्श रुप मे व्यक्ती स्वतंत्रता तथा गुटनिरपेक्ष निती के कारण भारत ने स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद अपनी क्षमता का परिचय समूचे विश्व को दिया है। क्षेत्रीकरण, विवाद क्षेत्रो का विभाजन तथा भाक्ती के प्रयोग की प्रवृत्तीया इन सौदेबाजी के तत्वो मे निरपेक्ष एवं निस्वार्थी भूमिका निभायी है।

**संदर्भः**

1. *शर्मा मथुरालाल, जैन राशीः प्रमुख देशो की विदेश नीतियॉ कॉलेज बुक डेपो, 1990, जयपूर, पृ. 83*
2. *शर्मा मथुरालाल, जैन राशीः अंन्तराष्ट्रीय राजनिती, विश्वभारती पब्लिकेशन, 2008, नई दिल्ली, पृ. 282*
3. *रायपूरकर वसंतः आतंरराष्ट्रीय सबंध, श्री मंगेश प्रकाशन, 2006, नागपूर, पृ. 282*
4. *रायपूरकर वंसतः आंतरराष्ट्रीय सबंध, पृ. 283*
5. *रायपूरकर वसंतः आंतरराष्ट्रीय सबंध, पृ. 285*
6. *शर्मा प्रभूदत्तः अन्तराष्ट्रीय राजनीति, कॉलेज बुक डिपो, 1990 पृ. 1*
7. *दिक्षीत. जे. एनः भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन 2008, नई दिल्ली, पृ .21*
8. *शर्मा मथुरालाल, जैन राशीः अंन्तराष्ट्रीय राजनिती, पृ. 261*
9. *शर्मा मथुरालाल, जैन राशीः प्रमुख देशो की विदेश नितीया पृ. 42*
10. *रायपूरकर वसंतः आंतरराष्ट्रीय सबंध, पृ. 300*
11. *शर्मा मथुरालाल, जैन शशीः प्रमुख देशो की विदेश नीतिया पृ. 16*
12. *रायपूरकर वसंतः आंतरराष्ट्रीय सबंध पृ. 181*
13. *युढ चंन्द्रशेखर, बहुगूणा निरंजनः अंतन्तराष्ट्रीय राजनिती, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, वि.सं. 2005 पृ.1*
14. *प्रसाद मुन्द्रिकाः अंतन्तराष्ट्रीय सम्बंधः अर्जुन पब्लिशींग हाउस दिल्ली, प्र.सं. 2005 पृ. 1*
15. *शर्मा मथुरालाल, जैन राशीः प्रमुख देशो की विदेश नीतिया पृ. 17*